

डॉ. डेविड डिसिल्वा , नए नियम की सांस्कृतिक दुनिया , सत्र 8, पवित्रता और प्रदूषण से जुड़े इब्रानियों को पढ़ना

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा द्वारा नए नियम की सांस्कृतिक दुनिया पर दिए गए अपने व्याख्यान में है। यह सत्र 8 है, पवित्रता और प्रदूषण से जुड़े इब्रानियों को पढ़ना।

इस श्रृंखला के समापन व्याख्यान में, हम एक साथ देखेंगे कि हमने पवित्रता और प्रदूषण तथा अधिकारों के बारे में क्या पता लगाया है जिसके माध्यम से कोई एक से दूसरे में जाता है।

यह नए नियम के पाठ को खोल सकता है, और इस विषय के लिए, हम इब्रानियों को लिखे पत्र पर वापस जाएंगे। उन चीजों में से एक जिसके बारे में हमें शायद सबसे पहले सोचना चाहिए, वह है पॉलिन मण्डली में इन शुद्धता नियमों में से कुछ का बड़ा मुद्दा। यह बहुत संभव है कि इब्रानियों के लेखक ने जिस श्रोता को संबोधित किया है, वह पॉल के प्रचार या पॉल के करीबी सहयोगियों में से किसी एक के प्रचार के परिणामस्वरूप बना था।

पत्र के बारे में हमारे पास जो बहुत कम सुराग हैं, उनमें से एक अध्याय 13, श्लोक 23 में अंतिम अभिवादन से आता है। लेखक लिखता है कि मैं चाहता हूँ कि आप यह जान लें कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है, और यदि वह समय पर आता है, तो जब मैं आपसे मिलूँगा तो वह मेरे साथ होगा। तो तीमुथियुस के साथ वह लिंक, जो स्पष्ट रूप से पॉल की टीम में पॉल के दाहिने हाथ के लोगों में से एक था, इस पत्र और चर्च या चर्चों को जोड़ता है जिन्हें यह पत्र पॉलिन मिशन को संबोधित करता है।

यदि यह इब्रानियों पर एक पाठ्यक्रम होता, तो हम इब्रानियों के संबंध में लेखकत्व के मुद्दों के बारे में बात कर सकते थे। मैं कहूँगा, यह निश्चित रूप से प्रेरित पौलुस द्वारा स्वयं नहीं लिखा गया है, कई कारणों से, जिनमें से सबसे कम महत्वपूर्ण यह तथ्य है कि लेखक ने स्वयं के बारे में दूसरों के उपदेश के माध्यम से वचन प्राप्त करने की बात कही है। जबकि पौलुस अपने अन्य पत्रों, जैसे गलातियों में स्पष्ट और अडिग है कि उसने सुसमाचार प्राप्त किया और परमेश्वर के प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन द्वारा विश्वास में आया, न कि किसी मनुष्य या पुरुषों के माध्यम से।

इसलिए, हम संभवतः एक ऐसे पाठ को देख रहे हैं जो पॉलिन मिशन से आता है। और 13.23 में यह संदर्भ पॉलिन टीम के सदस्यों के आंदोलनों के समन्वय में कुछ चल रही रुचि को दर्शाता है। अब, एक बात जो हम कह सकते हैं, क्योंकि यह एक पॉलिन मण्डली है, वह यह है कि इस्राएली शुद्धता संहिताओं का एक बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व पहले ही निपटाया जा चुका है और अलग रखा गया है।

और यही यहूदी और गैर-यहूदी के बीच की सीमा है जो पौलुस की समझ में है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह में क्या किया है। फिर से, कुछ प्रमुख पॉलिन पत्रों, रोमियों और गलातियों की ओर

मुड़ते हुए, पॉल बहुत स्पष्ट है और विस्तार से इस विचार को विकसित करता है कि पृथ्वी के अन्य लोगों से यहूदियों का अलगाव मानवता के साथ व्यवहार करने के परमेश्वर के इतिहास में अतीत का हिस्सा है। और अब, मसीह में, कुछ निर्णायक रूप से नया हुआ है जो यहूदी और गैर-यहूदी को समान शर्तों पर, समान शर्तों पर एक साथ लाता है।

हालाँकि इफिसियों के लेखकत्व पर विवाद है, लेकिन मुझे लगता है कि यह पॉलिन है, जो पॉल द्वारा लिखा गया है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि इसे किसने लिखा है, लेखक वास्तव में लोगों के मानचित्रों के संबंध में पॉल के जोर और यहूदियों और अन्यजातियों के संबंध में लोगों के मानचित्र में हुए परिवर्तन को समझता है। इसलिए, हम 2:14 और 2:15 में पढ़ते हैं, भगवान ने दोनों समूहों को एक बना दिया है और हमारे बीच की दुश्मनी को विभाजित करने वाली दीवार को तोड़ दिया है।

उसने व्यवस्था को उसकी आज्ञाओं और अध्यादेशों सहित समाप्त कर दिया है ताकि वह अपने अंदर दो के स्थान पर एक नई मानवता का निर्माण कर सके, इस प्रकार शांति स्थापित कर सके। इब्रानियों के लेखक ने उस मण्डली की ओर से पवित्र आत्मा के अनुभव के बारे में भी बात की है। उन्होंने अपने परिवर्तन के अनुभव के हिस्से के रूप में परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पवित्र आत्मा के वितरण का आनंद लिया है।

इसके अलावा, लेखक ने पवित्र आत्मा का हिस्सा प्राप्त करने के बारे में भी बात की है। पवित्र आत्मा पर यह जोर पौलुस के पत्रों, साथ ही प्रेरितों के काम अध्याय 10:11 और 15 में दिए गए जोर को भी याद दिलाता है, जिसका आशय है कि यहूदी और गैर-यहूदी दोनों को उनके यीशु पर भरोसा करने के आधार पर पवित्र आत्मा, पवित्र आत्मा देना, लोगों के पुराने पवित्रता मानचित्रों के पार होने का संकेत है। गैर-यहूदी अब प्रभु के लिए भी पवित्र हैं यदि वे मसीह पर भरोसा करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे यहूदी प्रभु के लिए पवित्र हैं क्योंकि वे मसीह पर भरोसा करते हैं।

और मसीह में दोनों को पवित्र आत्मा देना शुद्धता मानचित्रों के इस पुनर्लेखन की पुष्टि करता है। इसलिए, यदि परमेश्वर ने मसीह में एक साथ लाए गए परमेश्वर के नए लोगों के भीतर यहूदी और गैर-यहूदी के बीच अब कोई अवरोध नहीं होने का इरादा किया है, तो उस सीमा को बनाए रखने से संबंधित सभी शुद्धता संहिताएँ समाप्त हो जाती हैं और, वास्तव में, उन्हें इस हद तक दूर करने की आवश्यकता है कि वे उन चीजों को अलग कर दें जिन्हें परमेश्वर ने अब एक शरीर में जोड़ा है। इसलिए, हम पाते हैं कि पॉलिन ईसाई धर्म आहार संबंधी नियमों की आवश्यकता को अस्वीकार करता है, और वास्तव में, आहार संबंधी नियमों को अस्वीकार करने की आवश्यकता होती है, जहाँ वे यहूदियों को अलग-अलग खाने पर रोक सकते हैं यहूदी ईसाई गैर-यहूदी ईसाइयों से अलग मेज पर खाते हैं।

उदाहरण के लिए, हम इसे गलातियों 2:11 से 14 में काफी प्रमुखता से प्रतिबिम्बित होते हुए देखते हैं। और यहाँ 1 तीमोथियुस 4:4 से 5 में, एक सामान्य सिद्धांत के रूप में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि परमेश्वर द्वारा बनाई गई हर चीज़ अच्छी है, और किसी भी चीज़ को अस्वीकार नहीं किया जाना चाहिए, बशर्ते कि उसे धन्यवाद के साथ स्वीकार किया जाए। और यहाँ मुख्य शब्द है, क्योंकि यह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा पवित्र किया जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि, हालांकि, पॉल खुद और पॉलीन मिशन के सदस्य मूर्तियों को बलि चढ़ाए जाने वाले भोजन के बारे में बहुत सावधान रहते हैं। अगर भोजन वास्तव में मूर्ति के साथ किसी भी तरह के संबंध, भौतिक या मौखिक, से अलग है, तो यह ठीक है। लेकिन जैसे ही मूर्तिपूजा का विषय सामने आता है, यह ऐसी चीज बन जाती है जिससे बचना चाहिए क्योंकि वह सीमा, ईश्वर और मसीह के लोगों और मूर्तिपूजा अभ्यास के बीच की सीमा, एक सीमा बनी हुई है जिसे हर कीमत पर संरक्षित किया जाना चाहिए।

यहाँ तक कि सब्त का पालन, जो कि भिन्नता का एक और स्पष्ट चिह्न था, और खतना एक अधिकार के रूप में, अब मसीह के नए समुदाय में पौलुस और उसके मिशन के संबंध में कोई निर्देशात्मक मूल्य नहीं रखता। और जब हमारे लेखक, इब्रानियों के लेखक, अध्याय 4:9 से 11 में सब्त के विश्राम के बारे में लिखते हैं, तो वह जिस सब्त के विश्राम से संबंधित है, वह इस दुनिया में हर सप्ताह सातवें दिन का विश्राम नहीं है। यह सब्त का विश्राम है जिसका आनंद इस क्षेत्र से परे अनंत काल तक लिया जाता है।

यह वह स्थान है जहाँ भगवान विश्राम करने गए हैं, भौतिक, दृश्यमान सृष्टि से परे दिव्य क्षेत्र। यह स्वर्गीय मातृभूमि, स्थायी शहर, स्वर्गीय क्षेत्र है जहाँ भगवान की पूर्ण उपस्थिति निवास करती है। इस तरह की सभी बातें पहले ही कही जा चुकी हैं, पॉलीन मिशन के भीतर शुद्धता और प्रदूषण संबंधी चिंताओं पर फिर से ध्यान केंद्रित करते हुए, हम अभी भी सीमाओं को मजबूत करने के लिए शुद्धता की भाषा का इस्तेमाल होते हुए पाते हैं।

हालाँकि, यह यहूदी और गैर-यहूदी के बीच की सीमा नहीं है, बल्कि ईसाई, चाहे यहूदी हो या गैर-यहूदी, और गैर-ईसाई, चाहे यहूदी हो या गैर-यहूदी के बीच की नई सीमा है। उदाहरण के लिए, ईसाइयों के बारे में संतों के रूप में बोलने के सामान्य तरीके में यह देखा जाता है, लैटिन से एक तरह का अकेला शब्द, जिसका अर्थ है पवित्र लोग, पवित्र किए गए लोग। यह एक उदाहरण है, और हम इसे पूरे इब्रानियों में देखते हैं, उदाहरण के लिए, 6.10 में। लेखक मण्डलियों को एक दूसरे की सेवा करने, संतों की सेवा करने और सेवा करना जारी रखने का उल्लेख करता है।

और समापन अभिवादन में, वह श्रोताओं से सभी संतों, सभी पवित्र लोगों, सभी पवित्र लोगों का अभिवादन करने के लिए कहता है। वह 2.11 में और भी स्पष्ट रूप से उस व्यक्ति के बारे में बोलता है जो पवित्र बना रहा है और जिन्हें पवित्र बनाया जा रहा है, सभी एक ही मूल से आते हैं, अर्थात् मसीह और वे सभी जो मसीह में हैं। लेकिन वह फिर बहुत स्पष्ट रूप से उन लोगों के बारे में बोलता है जो मसीह में हैं, उन्हें अलग किया जा रहा है, पवित्र किया जा रहा है, किसी तरह की अनुष्ठान क्रिया से गुजर रहा है, भले ही उस अनुष्ठान को पूरी तरह से प्रतीकात्मक रूप से समझा जाए, जो उन्हें भगवान के लिए इस तरह से अलग करता है कि अन्य लोग भगवान के लिए अलग नहीं हैं।

हालाँकि, इब्रानियों के लेखक इससे कहीं आगे जाते हैं, और विशेष रूप से वर्णन करते हैं कि कैसे ईसाइयों को परमेश्वर के लिए अलग किया गया है, उन्हें शुद्ध और पवित्र किया गया है, न केवल इसलिए कि वे परमेश्वर के हैं, बल्कि पवित्र परमेश्वर की मध्यस्थता रहित उपस्थिति में प्रवेश

करें। यह इब्रानियों का एक प्रमुख जोर है, जिसके बारे में हम थोड़ी देर में विस्तार से बात करेंगे, लेकिन बस इसे वहाँ फेंकना है। इब्रानियों के लेखक इस तथ्य में गहन रूप से रुचि रखते हैं कि पुराने नियम के तहत, स्थानों का नक्शा अपरिवर्तनीय रहा।

मंदिर में चाहे जो भी हो, आम इस्राएली परम पवित्र स्थान में नहीं जा सकते थे। इस प्रकार परमेश्वर तक पहुँच लोगों और स्थानों के इस मानचित्र में थी। परमेश्वर तक पहुँच सीमित थी, और परमेश्वर के सामने आने के लिए सीमाओं को पार करने का कोई रास्ता नहीं था।

अब, एक अर्थ में, बेशक, हर इस्राएली परमेश्वर के सामने आ सकता था। भजन संहिता महत्वपूर्ण प्रार्थना जीवन का प्रमाण है। और अपोकलिप्सा के लिए एक और विज्ञापन देने के लिए, इसमें पाई जाने वाली कई प्रार्थनाएँ इस अवधि के दौरान यहूदियों के महत्वपूर्ण प्रार्थना जीवन का प्रमाण हैं, इस अर्थ में कि वे परमेश्वर के सामने आ सकते थे।

लेकिन दूसरे अर्थ में, वे परमेश्वर के सामने नहीं आ सकते थे। उन्हें यहीं रुकना था और दूसरों को थोड़ा आगे जाने देना था, यहाँ तक कि एक व्यक्ति को भी। और इब्रानियों के लेखक इस तथ्य से प्रभावित हैं कि यीशु की मृत्यु के साथ, अब यह सब खत्म हो गया है।

और जो कोई भी मसीह के माध्यम से परमेश्वर के पास आता है, वह योग्य है, पवित्र है, इस हद तक पवित्र बनाया गया है कि वह पृथ्वी पर परम पवित्र स्थान में नहीं जा सकता है, जो वैसे भी सिर्फ एक प्रति है, लेकिन वास्तव में ईश्वरीय क्षेत्र में प्रवेश कर सकता है और परमेश्वर की वास्तविक उपस्थिति में हमेशा के लिए वहाँ रह सकता है। और यह, इब्रानियों के लेखक के लिए, मसीह में अब हुई प्रमुख सफलता है। हालाँकि, इस विशेष प्रस्तुति में हम कहाँ हैं, उस पर लौटने के लिए, हम कुछ ग्रंथों को देखते हैं जिनमें लेखक इस बारे में बात करता है।

अध्याय 10, श्लोक 10 में, वह कहता है, हम मसीह के शरीर, यीशु मसीह की बलि के द्वारा एक बार और हमेशा के लिए पवित्र किए गए हैं। और कुछ ही श्लोक बाद में 10:14 में, एक ही बलि के द्वारा, मसीह ने उन लोगों को हमेशा के लिए सिद्ध कर दिया है जिन्हें पवित्र बनाया जा रहा है। लेखक यहाँ एक तरह के शुद्धिकरण संस्कार के बारे में बात कर रहा है, लेकिन एक पवित्रीकरण संस्कार जो उन लोगों के साथ हुआ है जो यीशु की मृत्यु के आधार पर यीशु पर भरोसा करते हैं।

प्राचीन इस्राएल के लोगों के नक्शे के विपरीत, जहाँ केवल पुजारी ही पवित्रीकरण संस्कार से गुजरते थे जो उन्हें पवित्र स्थानों में सेवा करने के लिए अलग करता था, इब्रानियों के लेखक यीशु की मृत्यु को कुछ ऐसा मानते हैं जिसने यीशु पर भरोसा करने वाले सामान्य मानव को बदल दिया और पवित्र कर दिया ताकि वे सभी एक साथ उन सीमाओं को पार करके परमेश्वर की वास्तविक उपस्थिति में आ सकें। अब, लेखक उस मूल आधार को स्वीकार करता है जो इस्राएल की बलिदान प्रणाली का आधार है, और वह बस इतना है कि बिना खून बहाए पापों की कोई क्षमा नहीं है। लेकिन वह इसे बैल और बकरियों की बलि के विपरीत, यीशु की मृत्यु पर लागू करता है, जो विश्वासियों के पापों को निर्णायक रूप से हटाने के रूप में है, न केवल विश्वासियों के विवेक से बल्कि परमेश्वर की स्मृति से भी।

और इसलिए, हम इब्रानियों 9, आयत 13 से 14 में पढ़ते हैं, यदि बैलों और बकरों का खून और बछिया की छिड़की हुई राख उन लोगों को पवित्र करती है जो शरीर की शुद्धता के संबंध में अशुद्ध हो गए हैं, तो मसीह का खून, जिसने खुद को सनातन आत्मा के माध्यम से परमेश्वर को निर्दोष रूप से अर्पित किया, हमारे विवेक को मृत कर्मों से कितना अधिक शुद्ध करेगा ताकि हम जीवित परमेश्वर की आराधना कर सकें? यहाँ, अपने तर्क को बनाने के लिए, लेखक बाहरी शुद्धि और आंतरिक शुद्धि के बीच एक द्वंद्व स्थापित करता है। वह लेविटिकल कानून संहिता के तहत पशु बलि को ऐसे कार्यों के रूप में देखता है जो बाहरी प्रदूषण का ख्याल रखते हैं और उससे निपटते हैं, लेकिन आंतरिक प्रदूषण से नहीं निपटते हैं। वह दावा करता है कि यीशु द्वारा खुद को अर्पित करने से बेहतर बलिदान, आज्ञाकारिता का उसका सही कार्य, इसे कुछ हद तक भदे ढंग से कहें तो, बहुत अधिक शक्तिशाली अनुष्ठान डिटर्जेंट है।

यह गहराई से साफ है, यह केवल बाहरी सफाई नहीं है जो कुछ करती है, जो ईश्वर के साथ कुछ बातचीत करने की अनुमति देती है, बल्कि संपूर्ण सफाई जो ईश्वर के अपने स्थान में, ईश्वर के अपने स्थान में, स्वर्ग में ईश्वर तक पूरी तरह से अंतरंग पहुंच की अनुमति देती है। जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, लेकिन अब मैं इब्रानियों के लेखक के बारे में अधिक विस्तार से बात करना चाहता हूँ, जिन्होंने पवित्र स्थान और कर्मियों के मानचित्रों को फिर से लिखा है, जो हमने अपने पिछले व्याख्यान में देखा था। हमने मंदिर के नक्शे के बारे में बात की, और हमें यहां मानसिक रूप से इसे याद करने की आवश्यकता है।

इब्रानियों के लेखक को मंदिर के उन मानचित्रों और उन लोगों के मानचित्रों द्वारा प्रदर्शित ईश्वर तक क्रमिक पहुंच के बारे में बहुत अच्छी तरह से जानकारी है, जो पवित्रता की अधिक डिग्री के कारण सक्षम हैं, जो उस मानचित्र पर किन रेखाओं को पार कर सकते हैं। इब्रानियों के लेखक का मानना है कि यह यहूदी चिंतन, पुराने नियम पर यहूदी ईसाई चिंतन में एक बिल्कुल नया कदम दर्शाता है। इब्रानियों के लेखक का मानना है कि यह ईश्वर के लोगों के लिए ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नहीं था, कि ईश्वर के लोगों के लिए ईश्वर के दृष्टिकोण को अंततः ईश्वर की स्वयं की उपस्थिति तक पहुंच की उन सीमाओं को पार करने की आवश्यकता थी, जैसा कि उन मानचित्रों में दर्शाया गया है और कायम रखा गया है।

ऐसा लगता है कि लेखक को यरूशलेम के पवित्र स्थानों से कोई मतलब नहीं है, भले ही वह उनमें गहरी दिलचस्पी रखता हो। वह उनके बारे में अनुभव के आधार पर नहीं, बल्कि शास्त्रों के आधार पर ही बात करता है। वह उनके बारे में जो कुछ भी कहता है, वह तम्बू के बारे में है।

वह वास्तव में उस खूबसूरत संगमरमर के मंदिर के बारे में बात नहीं करते जो उनके समय में मौजूद था, पूरी संभावना है कि उनके लेखन के समय भी मौजूद था। क्योंकि ये वे स्थान नहीं हैं जहाँ ईश्वर के साथ प्रभावी मध्यस्थता होती है, वे केवल गौण और प्रतीकात्मक महत्व के हैं।

इब्रानियों के लेखक, वास्तव में दूसरे मंदिर काल के कई यहूदियों की तरह, तम्बू या मंदिर को स्वर्गीय मंदिर की नकल मानते थे। इब्रानियों के लेखक, लेकिन केवल वे ही नहीं, बल्कि सुलैमान की बुद्धि के लेखक जैसे लोग, निर्गमन में एक श्लोक को देखते हैं जो अध्याय और श्लोक संदर्भ के संदर्भ में इस समय मुझे याद नहीं है, लेकिन भगवान मूसा से कहते हैं, देखो तुम सब कुछ उस

नमूने के अनुसार बनाओ जो तुम्हें पहाड़ पर दिखाया गया था। मैं निर्गमन 2540 कहना चाहता हूँ, लेकिन यह मेरे लिए पासा फेंकने जैसा है।

और यहूदियों ने उस अर्थ को पढ़ा, ठीक है, मूसा को कोई खाका नहीं दिखाया गया था, बल्कि मूसा को स्वर्गीय मंदिर दिखाया गया था। और सांसारिक स्थानों में इसका एक मॉडल बनाने के बारे में निर्देश दिए जहाँ बलिदान और मध्यस्थता की जाएगी। इब्रानियों के लेखक ने तब कहा, आप जानते हैं, हम वास्तव में सांसारिक प्रतिलिपि में होने वाली मध्यस्थता के बारे में चिंतित नहीं हैं।

हम उस मध्यस्थता के बारे में चिंतित हैं जो मंदिर में ही होती है, तम्बू में ही, जहाँ परमेश्वर निवास करता है। वह चीज़ जिसकी प्रतिकृति तम्बू और फिर मंदिर थे। यहाँ, हम यीशु की मृत्यु और स्वर्ग में चढ़ने के बारे में बात करेंगे।

सांसारिक मंदिर तो बस एक नमूना था। निर्णायक रूप से प्रभावी मध्यस्थता को उस व्यक्ति की प्रतीक्षा करनी होगी जो स्वर्गीय पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता है। वहाँ, मध्यस्थता लागू की जाएगी जो परमेश्वर तक मानव पहुँच में निर्णायक अंतर लाएगी।

यह ईश्वर तक पहुँच की सभी सीमाओं को तोड़ देगा जो स्थानों और व्यक्तियों के लेविटिकल मानचित्र में दर्शाए गए थे। लेखक का तर्क है कि रेगिस्तान के तम्बू, जंगल के तम्बू और फिर, निश्चित रूप से, बाद में यरूशलेम मंदिर की बलिदान प्रणाली कभी भी लोगों के पापों से निर्णायक रूप से निपटने में सक्षम नहीं थी। जैसा कि उन्होंने कहा, इसने लोगों और ईश्वर के बीच एक निश्चित सीमा तक चल रही गतिविधि को सक्षम किया, लेकिन उन पापों से कभी भी निर्णायक रूप से निपटा नहीं, जिससे लोग खुद को स्वच्छ, पर्याप्त रूप से स्वच्छ और पवित्र बना सकें, ताकि वे ईश्वर के करीब आ सकें, जितना कि इज़राइल के पवित्र स्थानों के मानचित्रों ने अनुमति दी थी।

इब्रानियों के लेखक पीछे मुड़कर देखते हैं और कहते हैं कि वे लोग परम पवित्र स्थान की सांसारिक प्रतिलिपि में भी प्रवेश नहीं कर सकते थे, स्वर्ग में प्रवेश करना तो दूर की बात है, वास्तविक परम पवित्र स्थान जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति केवल प्रतीकात्मक नहीं है बल्कि पूरी तरह से महसूस की जाती है। क्यों? लेखक 10:4 में बहुत ही आश्चर्यजनक रूप से कहता है, बैल और बकरियों के खून के लिए पापों को दूर करना असंभव है। अब, यह एक आश्चर्यजनक घोषणा है जब शास्त्र, लैव्यव्यवस्था 17:11, कहता है कि शरीर का जीवन खून में है।

मैंने इसे तुम्हारे प्राणों के लिए वेदी पर प्रायश्चित्त करने के लिए तुम्हें दिया है, क्योंकि जीवन के समान ही यह रक्त है जो प्रायश्चित्त करता है। लेकिन लेखक यहूदी लोगों के व्यवहार को ऐतिहासिक रूप से देखता है और पाता है कि ये बलिदान बार-बार होते हैं, और लोगों के लिए कुछ भी नहीं बदलता है। वह पशु बलि की पुनरावृत्ति को देखता है, विशेष रूप से प्रायश्चित्त के वार्षिक दिन पर, और वह सुझाव देता है कि पुनरावृत्ति ही उनकी अप्रभावीता को प्रकट करती है, अन्यथा, वह बयानबाजी में पूछता है, क्या उन्हें चढ़ाना बंद नहीं कर दिया गया होता? इसके अलावा, हालांकि, वह यह साहसिक दावा करता है क्योंकि जिस प्रदूषण को हटाने की सबसे

अधिक आवश्यकता थी वह मानव विवेक का मामला था, इसलिए लेखक के अनुसार केवल बाहरी सफाई के लिए अच्छे अधिकारों की पहुंच से परे था, और स्वर्गीय परमपवित्र स्थान को खराब करने का मामला था, इसलिए लेवी के उच्च पुजारियों की पहुंच से परे था।

इसलिए, जंगल में तम्बू में या यरूशलेम के मंदिर में प्रायश्चित के अधिकार के दिन जो कुछ भी हुआ, वह लोगों की ओर से निर्णायक शुद्धिकरण करने के लिए क्या होने की आवश्यकता थी, इसका एक प्रकार का मॉडल और पूर्वाभास था। इसलिए, लेखक 923 में निष्कर्ष निकालता है, तब स्वर्ग में पवित्र स्थानों की प्रतियों के लिए, जो सांसारिक तम्बू की प्रतियाँ हैं, बैलों और बकरियों के खून जैसी चीज़ों से शुद्ध किया जाना आवश्यक था, लेकिन स्वर्गीय स्थानों को इनसे बेहतर बलिदानों से शुद्ध किया जाना चाहिए था। इसलिए, यीशु की मृत्यु वह है जिसे वह उस शुद्धिकरण को प्रभावित करने वाली चीज़ के रूप में आगे रखेगा।

इसके अलावा, लेखक सुझाव देता है कि लेवी के पुजारी स्वयं इस कार्य के लिए अपर्याप्त थे। लेखक का प्रारंभिक बिंदु यहाँ फिर से एक सामान्य सिद्धांत है जो यरूशलेम मंदिर पंथ को रेखांकित करता है। और यहाँ मैंने इब्रानियों 5 :1 से पढ़ा कि मनुष्यों में से लिया गया प्रत्येक महायाजक परमेश्वर से संबंधित बातों के संबंध में मनुष्यों की ओर से नियुक्त किया जाता है।

लेकिन महायाजक के पाप के प्रति स्वयं के उत्तरदायित्व के लिए यह आवश्यक है कि वह लोगों की ओर से पापों की बलि चढ़ाने से पहले अपने और अपने परिवार के पापों से निपटने के लिए बलिदान चढ़ाए। यह दैनिक बलिदानों और प्रायश्चित बलिदान के दिन की एक प्रमुख विशेषता है, जैसा कि लैव्यव्यवस्था में वर्णन, या मुझे कहना चाहिए कि इसके लिए नुस्खे बताते हैं। पहला पशु बलिदान पुजारी के पापों के लिए होता है, लोगों के पापों के लिए नहीं।

हालाँकि, यीशु पाप रहित होने के कारण और इसलिए अपने आप में किसी भी प्रकार की अशुद्धता के बिना, गुणात्मक रूप से बेहतर मध्यस्थ हैं। हालाँकि, उन्हें एक पुजारी या मध्यस्थ के रूप में स्थापित किया गया है, वंशावली के आधार पर नहीं, इसलिए नहीं कि वे उस जनजाति से आते हैं जिसे प्रभु के लिए पवित्र होने के लिए अन्य जनजातियों से अलग रखा गया था, लेवी की जनजाति, बल्कि उन्हें एक अविनाशी जीवन के आधार पर एक पुजारी के रूप में स्थापित किया गया है। और यहाँ, निश्चित रूप से, लेखक मृतकों में से उनके पुनरुत्थान के बारे में सोच रहा है।

लेखक ने अभी-अभी इस्राएल की आंतरिक भेदभाव और पदानुक्रम की नींव पर एक धार्मिक हथौड़ा चलाया है, लेवी का बाकी इस्राएलियों से भेदभाव और उसके भीतर, लेवी के परिवार के भीतर पुरोहित कुलों का भेदभाव। अब, लेखक यीशु की मृत्यु को एक ऐसे कार्य के रूप में देखता है जो लोगों को पवित्र करता है, जो आम लोगों को लेता है, और उन्हें पवित्र बनाता है ताकि वे ईश्वर तक पहुँच सकें जो केवल पवित्र पुजारियों और यहाँ तक कि पवित्र महायाजक को ही प्राप्त थी, और उससे भी आगे। और इसलिए, वह यीशु की मृत्यु और ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और यीशु के स्वर्गारोहण की व्याख्या एक ब्रह्मांडीय प्रायश्चित दिवस के महत्व को सही रूप में ले जाने के रूप में करता है।

अब, उम्मीद है, आप इब्रानियों 7 से 10 को पढ़ेंगे और ऐसा करते समय इन शब्दों में इसके बारे में सोचेंगे। इस तथ्य को नज़रअंदाज़ न करें कि लेखक इस भाषा, इस अनुष्ठान टेम्पलेट, प्रायश्चित के दिन का उपयोग क्रूस पर चढ़ाए जाने और उसके बाद की घटनाओं के लिए एक व्याख्यात्मक रूपरेखा के रूप में कर रहा है। और इस प्रकार, आप जानते हैं, ऐसा लगता है कि हमें लेखक के रूपकों को कुछ अधिक ठोस नहीं बनाना चाहिए।

हमें यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि यीशु वास्तव में अपने खून से भरा कटोरा लेकर स्वर्ग में प्रवेश कर रहे हैं। भौतिक पदार्थ मायने नहीं रखता। यह यीशु की मृत्यु तक परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता है जो मायने रखती है और इसका पवित्रीकरण प्रभाव है।

लेकिन इब्रानियों के लेखक, उनके रूपकों और उनकी व्याख्या में केवल प्राचीन दुनिया में शुद्धता संहिताओं और शुद्धिकरण के अधिकारों और पवित्रीकरण के अधिकारों की शक्ति और बल के कारण शक्ति और व्याख्यात्मक बल है। अब भले ही हम पहले से कहीं गई कुछ बातों के संबंध में थोड़ा अनावश्यक हो जाएँ, मैं यहाँ प्रायश्चित अनुष्ठान के दिन के तंत्र को देखना चाहता हूँ जैसा कि लैव्यव्यवस्था 16 में पाया जाता है, और फिर इब्रानियों के लेखक ने यीशु की मृत्यु और स्वर्गारोहण के बारे में सोचने के लिए इसे एक रूपरेखा के रूप में क्या बनाया है। तो, प्रायश्चित के दिन, योम किप्पूर पर, एक विशेष क्रम में कई कार्य होते हैं।

सबसे पहले, और मैं कुछ बातें छोड़ दूँगा; अन्यथा, मैं आपको लैव्यव्यवस्था 16 पढ़कर सुना सकता हूँ। सबसे पहले, महायाजक एक अनुष्ठानिक स्नान से गुजरता है, प्रदूषण से निपटने वाले पानी में डुबकी लगाता है। फिर महायाजक अपने पापों और अपने घर के पापों के लिए एक बैल की बलि देता है।

वह इस बैल का खून परम पवित्र स्थान में ले जाता है और बैल के खून को वाचा के सन्दूक के ढक्कन पर सात बार छिड़कता है। फिर वह भगवान के सामने दो बकरे पेश करता है और उन पर चिट्ठी डालता है और जिस पर चिट्ठी निकलती है, वह उसे बलि चढ़ाता है, उसे मारता है, और उसका कुछ खून फिर से परम पवित्र स्थान में ले जाता है और वाचा के सन्दूक के ढक्कन पर छिड़कता है, जिसे दया का आसन भी कहा जाता है। वाचा के सन्दूक का ढक्कन मूल रूप से वह स्थान है जहाँ भगवान बैठते हैं, उस स्थान पर उनके सिंहासन का आधार है।

इसलिए, वह वाचा के सन्दूक पर फिर से इस बकरे का खून छिड़कता है। फिर वह दूसरे बकरे, जीवित बकरे पर हाथ रखता है, और प्रतीकात्मक रूप से उस बकरे को इस्राएल के सभी लोगों के सारे पाप हस्तांतरित कर देता है। और फिर वह उस बकरे को अज़ाजेल के पास, वास्तव में, मरने के लिए रेगिस्तान में भेज देता है।

हालाँकि, महत्वपूर्ण बात यह है कि बकरी अपने भ्रमण के दौरान लोगों के पापों और प्रदूषण को लोगों से दूर, शिविर से दूर ले जाती है। और, बेशक, बाद में, इस्राएल के बसे हुए स्थानों से भी दूर। फिर, महायाजक एक और अनुष्ठान स्नान करता है।

जब यह सब खत्म हो जाता है, और वह बैल का कुछ हिस्सा और पहले बकरे का कुछ हिस्सा होमबलि के रूप में चढ़ाता है, तो कम से कम चर्बी तो चढ़ा ही रही है। मुझे यह स्वीकार करना

होगा कि मेरे पढ़ने के अनुसार, इस बिंदु पर लेवितिकस थोड़ा अस्पष्ट है, लेकिन मैं लेवितिकस का विद्वान नहीं हूँ।

फिर, इन जानवरों के अवशेषों को शिविर के बाहर ले जाया जाता है और उन्हें पूरी तरह से आग में भस्म कर दिया जाता है। शिविर के बाहर उनकी पूरी तरह से देखभाल की जाती है। ध्यान दें कि इस अनुष्ठान के अनुसार, लोगों और आंतरिक गर्भगृह, पवित्रतम स्थान, दोनों को पापों से शुद्धिकरण की आवश्यकता होती है।

इसलिए दो बकरियाँ। बाद वाला, पवित्रतम स्थान की शुद्धि, नाटकीय रूप से अपमान, अपवित्रता और इसलिए उस खतरे का प्रतिनिधित्व करता है जो देश में लोगों के बीच पाप उनके बीच पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति को प्रस्तुत करता है। अब यह सब यीशु के क्रूस पर चढ़ने और स्वर्गारोहण की हिब्रू की व्याख्या के लेखक के लिए रूपरेखा बन जाता है।

और जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, वह पुनरुत्थान की बात करता है और उसे मानता है। यह सिर्फ इतना है कि पुनरुत्थान वास्तव में इब्रानियों 9 और 10 में कारक नहीं है। इसलिए, यह इस अनुष्ठान के इस ब्रह्मांडीय संस्करण में कोई भूमिका नहीं निभाता है।

पहली उल्लेखनीय बात यह है कि इस याजक को अपने पापों के लिए बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। हम इब्रानियों 7 में पढ़ते हैं कि अन्य महायाजकों के विपरीत, यीशु को हर दिन बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, पहले अपने पापों के लिए और फिर लोगों के पापों के लिए। उसने लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाकर ऐसा किया, उसने यह एक बार के लिए किया जब उसने खुद को बलिदान कर दिया।

क्योंकि व्यवस्था उन लोगों को महायाजक नियुक्त करती है जो कमज़ोरी के अधीन हैं और इसलिए उन्हें अपने पापों के लिए बलिदान चढ़ाने की ज़रूरत है। लेकिन शपथ का वचन, जो व्यवस्था से बाद में आया, एक ऐसे बेटे को नियुक्त करता है जिसे हमेशा के लिए सिद्ध बनाया गया है। फिर, यह एक तरह से गैर-सहसंबंध का बिंदु है क्योंकि यीशु को वह नहीं करना है जो महायाजकों को उस पहले जानवर, बैल के संबंध में करना था, जिसे पुजारी के अपने पापों के लिए चढ़ाया गया था।

फिर, इब्रानियों के लेखक ने शहर के बाहर यीशु की मृत्यु के बारे में बात की। उसे यह प्रासंगिक लगता है कि क्रूस पर चढ़ाए जाने का स्थान शिविर के अंदर नहीं था, बल्कि शिविर के बाहर था। और वह अध्याय 13 में इस समानता को दर्शाता है।

क्योंकि जिन जानवरों का खून महायाजक पाप के लिए बलिदान के रूप में पवित्र स्थान में लाता है, उनके शरीर को छावनी के बाहर जला दिया जाता है। इसलिए, यीशु ने भी लोगों को अपने खून से पवित्र करने के लिए शहर के फाटक के बाहर कष्ट सहे। इसलिए, हमारे पास वह समानांतर है जहाँ यीशु, वास्तव में, उस बकरे की भूमिका निभाता है जिसे लोगों के पापों के लिए बलि किया गया था।

लेकिन साथ ही, हम सिर्फ पापों से नहीं निपट रहे हैं, माफ़ करें, हमारे विवेक पर पाप के दाग से नहीं। हम परमेश्वर की उपस्थिति में पाप के प्रदूषण से भी निपट रहे हैं। और इसलिए, इब्रानियों के लेखक ने यीशु के स्वर्ग में प्रवेश को इस अनुष्ठान परिसर के हिस्से के रूप में देखा है, जैसा कि उन्होंने अध्याय 9, श्लोक 11 और 12 में लिखा है।

जब मसीह उन अच्छी चीज़ों के महायाजक के रूप में आया जो आई हैं, तो उसने बड़े और अधिक परिपूर्ण तम्बू के माध्यम से, जो हाथों से नहीं बनाया गया है, इस सृष्टि से नहीं, एक बार के लिए पवित्र स्थान में प्रवेश किया, बकरियों और बछड़ों के खून से नहीं, बल्कि अपने स्वयं के खून से, इस प्रकार अनन्त मुक्ति प्राप्त की। और फिर, इब्रानियों 9, 23 से 24 में, लेखक वाचा के सन्दूक के ढक्कन पर बैल और बकरी के खून के छिड़काव के बारे में लिखता है। वह लिखता है कि स्वर्गीय चीज़ों के रेखाचित्रों को इन अनुष्ठानों के साथ शुद्ध किया जाना आवश्यक था, लेकिन स्वर्गीय चीज़ें स्वयं, दृश्यमान स्वर्ग से परे परमेश्वर के वास्तविक पवित्रतम स्थान, इनसे बेहतर बलिदानों की आवश्यकता है।

क्योंकि मसीह ने मानव हाथों से बनाए गए पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं किया, जो कि सच्चे पवित्र स्थान की मात्र एक प्रति है, बल्कि वह अब हमारे लिए परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट होने के लिए स्वर्ग में ही प्रवेश कर गया। इस अनुष्ठान में दूसरे आगमन का भी थोड़ा सा समावेश है क्योंकि, निश्चित रूप से, महायाजक पवित्र स्थानों से फिर से प्रकट होगा, और वह फिर से प्रकट होना प्रायश्चित के दिन के अनुष्ठानों के प्रभावी समापन और उपलब्धि का संकेत देगा। और इसी तरह मसीह भी, जो कई लोगों के पापों को उठाने के लिए एक बार बलिदान हुआ था, दूसरी बार प्रकट होगा, स्वर्गीय परमपवित्र स्थान से वापस आएगा, पाप से निपटने के लिए नहीं, बल्कि उन लोगों को बचाने के लिए वापस आएगा और दूसरी बार प्रकट होगा जो उसका बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

यीशु की अपने अनुयायियों की ओर से आज्ञाकारिता इस प्रकार पूर्ण शुद्धिकरण को प्रभावित करती है, जिससे उनके अनुयायी अब, और यह एक शानदार उपलब्धि है, उनके अनुयायी अब केवल यरूशलेम में पवित्रतम की दहलीज को पार करने के लिए ही योग्य नहीं हैं, क्योंकि यह केवल एक नमूना है, यह मायने नहीं रखता, बल्कि स्वर्ग में पवित्रतम की दहलीज को पार करने के लिए और इस प्रकार हमेशा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति का आनंद लेने के लिए। और इसलिए लेखक लिखते हैं, इसलिए, मुझे खेद है कि यह अध्याय 10, श्लोक 19 और उसके बाद है, इसलिए भाइयों और बहनों, चूँकि हमारे पास यीशु के लहू के द्वारा पवित्र स्थानों में प्रवेश करने का साहस है, इसलिए आइए हम सच्चे दिल और विश्वास के पूर्ण आश्वासन के साथ, दिलों को दुष्ट विवेक से धोकर और शरीर को स्वच्छ जल से धोकर निकट आएँ। मुझे लगता है कि इस अनुच्छेद में बपतिस्मा का एक स्पष्ट संदर्भ है, जो व्यक्तिगत ईसाई को शुद्धिकरण लागू करने में कुछ भूमिका निभाता है, जैसे कि महायाजक को पवित्रतम की प्रतिलिपि में प्रवेश करने से पहले एक अनुष्ठान विसर्जन करना पड़ता था।

मसीह में, ईश्वर तक पहुँच अब प्रदूषण निषेधों और अगम्य रेखाओं से घिरी हुई नहीं है, बल्कि एक उत्सवपूर्ण घर वापसी बन जाती है जिसमें कई बेटे और बेटियाँ स्वर्ग में अपने पिता के घर में प्रवेश कर सकते हैं। अभी के लिए, यह ईसाई की आशा है जो पर्दे के भीतरी हिस्से में प्रवेश करती है

जहाँ यीशु हमारी ओर से एक अग्रदूत के रूप में प्रवेश किया था, और इब्रानियों 6 की वह छवि कल्पना करती है कि हमारे पास स्वर्गीय पवित्रतम में एक तरह का बंधन है, और वह बंधन हमारी आशा है, यीशु से हमारा संबंध, हमारा अग्रदूत, हमारा अग्रदूत जो हमारी ओर से वहाँ गया है। जैसे-जैसे विश्वासी अपने विश्वास की यात्रा में आगे बढ़ते हैं, पीछे हटने के बजाय, वे स्वयं स्वर्ग की दहलीज के करीब और करीब पहुँचते जा रहे हैं, जिसके पार उन्हें यीशु के पवित्र बलिदान के माध्यम से पार करने के योग्य बनाया गया है।

और इसलिए, संरक्षण और पारस्परिकता की लिपियों की तरह, जिन्हें हमने अपने चौथे व्याख्यान में पहले खोजा था, पवित्रता और बलिदान की भाषा भी श्रोताओं को अपने पड़ोसी के प्रतिरोध की शक्ति के विरुद्ध शिष्यत्व के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह इस तथ्य में भी परिलक्षित होता है कि एक साथ इकट्ठा होना छोड़ना अब जानबूझकर पाप करने के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसके लिए, और यहाँ फिर से, लेखक टोरा की पवित्रता संहिताओं की मान्यताओं को स्वीकार करता है और उनका उपयोग करता है, जिसके लिए पापों के लिए कोई बलिदान नहीं है। अब लेखक द्वारा विशेष प्रथाओं को ऐसे कार्यों के रूप में बढ़ावा दिया जाता है जिनका ईश्वर और ईश्वर के लोगों के बीच के रिश्ते के लिए मूल्य है।

जाहिर है, लेवी के किसी भी बलिदान का अब कोई मूल्य नहीं रह गया है क्योंकि वे सभी हमारे लिए यीशु के एक बलिदान में बदल दिए गए हैं और उनसे बढ़कर हो गए हैं। फिर भी, एक समर्पित लोगों के रूप में, शिष्य अब एक तरह की पुजारी सेवा की पेशकश करने और ऐसे कार्य करने की स्थिति में हैं जो परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के बीच आदान-प्रदान का नया माध्यम बन जाते हैं। इसलिए, हम इब्रानियों 13 में पढ़ते हैं, तो उसके द्वारा, तो यीशु के द्वारा, आइए हम हमेशा परमेश्वर को स्तुति का बलिदान चढ़ाएँ, वह बलिदान जो स्तुति में निहित है, अर्थात्, होठों का फल जो खुले तौर पर उसके नाम का अंगीकार करते हैं।

हमें भलाई करना या दूसरों को बांटना नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि इस तरह के बलिदानों से परमेश्वर बहुत प्रसन्न होता है। इसलिए, लेखक अपने श्रोताओं, अपने समर्पित श्रोताओं को छोड़ता है, जो अब तैयार हैं, जब भी दिन आएगा, स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए, परमेश्वर के वास्तविक पवित्रतम स्थान में। वह उन्हें इस पुरोहित कर्तव्य के साथ छोड़ता है, मानो, संभावित रूप से शत्रुतापूर्ण दुनिया के बीच मसीह की गवाही देना जारी रखना और एक दूसरे को प्रेम और सेवा के कार्य प्रदान करना जारी रखना, क्योंकि ये चीजें एक साथ ली गई बलिदान हैं, आदान-प्रदान की भाषा है जिसका अब यीशु के इस तरफ परमेश्वर के लिए अर्थ है।

ऐतिहासिक शुद्धता और प्रदूषण संहिताओं और इब्रानियों के बारे में हमारी खोज, और सामान्य रूप से पॉलिन मिशन का उल्लेख नहीं करना, हमें आज शुद्धता की सीमाओं की फिर से जांच करने के लिए प्रेरित कर सकता है। और एक ओर, वे हमें कुछ सीमाओं को पार करने की चुनौती देते हैं। हम या तो इस विश्वास के अनुसार जीते हैं, या जीने से इनकार करते हैं कि मसीह पर भरोसा करने वाले सभी लोग मसीह में एक शरीर हैं।

प्रदूषण से बचना स्वच्छता या पवित्रता की रक्षा के लिए एक रक्षात्मक रणनीति है, लेकिन यीशु ने खुद को फिर से परिभाषित किया कि हमें परमेश्वर की पवित्रता को कैसे प्रतिबिंबित करना है।

यह अब पवित्र होने का मामला नहीं है, और इसलिए कुछ प्रदूषणों से पूरी तरह से दूर रहना, और प्रदूषित लोगों से सावधान रहना, क्योंकि मैं पवित्र हूँ, लेकिन अब यह दयालु है क्योंकि तुम्हारा पिता दयालु है। और यह एक बहुत ही अलग रणनीति है।

यह ईश्वर के आवश्यक चरित्र को प्रतिबिम्बित करने के साधन के रूप में दयालुता को बढ़ाने की एक रणनीति है। आप वाक्यविन्यास से देख सकते हैं कि यह लैव्यव्यवस्था 11 का एक रूपांतरण है। पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।

दयालु बनो, क्योंकि मैं दयालु हूँ। यीशु की सेवकाई और उनके द्वारा शुरू किए गए आंदोलन में पवित्रता और प्रदूषण के इज़राइल के नक्शों का परिवर्तन हमें चुनौती देता है कि हम अपने, अपने समाजों और अपने राष्ट्र के स्वच्छ और अशुद्ध नक्शों, अंदरूनी और बाहरी लोगों के नक्शों की जाँच करें और उन रेखाओं या उन नक्शों को मसीह में एक नई मानवता के लिए परमेश्वर के दृष्टिकोण को मात न देने दें। साथ ही, ऐसी रेखाएँ भी हैं जिनका ध्यान रखना चाहिए।

मसीह का शरीर पवित्र है। पवित्र परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संपर्क के विशाल विशेषाधिकार के लिए इसे शुद्ध और पवित्र किया गया है। पवित्रता की शक्ति और खतरे के लिए केवल एक गहरी सराहना, और जिस देखभाल के साथ प्राचीन दुनिया में इसका सामना किया गया था, वह हमें यीशु द्वारा अपनी मृत्यु, स्वर्गारोहण और हमारे ऊपर पवित्र आत्मा को भेजने में हमारे लिए जो कुछ हासिल किया गया है, उसके आनुपातिक मूल्यांकन के लिए तैयार कर सकता है।

लेकिन अब जब हम इस तरह से पवित्र हो चुके हैं, और पवित्र आत्मा हम पर स्थापित है, तो हमें इस शुद्धिकरण के अनुरूप चलते रहने और मसीह के शरीर की पवित्रता की रक्षा करने की चुनौती दी जाती है। हमें ऐसा करने के लिए कैसे निर्देशित किया जाता है? खैर, नए नियम के पाठ हमें मसीह के शरीर की पवित्रता को आंतरिक मतभेद, शक्ति के खेल, या मसीह के शरीर के ढाँचे में अन्य दरारों के प्रदूषण से बचाने का निर्देश देते हैं। इसे दुनिया की प्रथाओं, मूल्यों और लक्ष्यों के प्रदूषण से बचाने के लिए, जहाँ तक ये परमेश्वर के लोगों और पूरी दुनिया के लिए परमेश्वर के धार्मिक दृष्टिकोण के रास्ते में आते हैं।

और, बेशक, मसीह के शरीर की पवित्रता को हमारे अपने दुराचार के प्रदूषण से बचाने के लिए, जहाँ हम जुनून और इच्छाओं के आवेगों का अनुसरण करने के लिए लुभाए जाते हैं जो हमें पवित्रता और धार्मिकता के परमेश्वर के मानकों का उल्लंघन करने के लिए प्रेरित करते हैं। संक्षेप में, उस सांस्कृतिक दुनिया पर ध्यान देना जिसमें प्रारंभिक चर्च, उसके विश्वास, उसके व्यवहार और उसके लेखन ने आकार लिया, हमें उन ग्रंथों की अधिक प्रामाणिक सुनवाई की ओर ले जाता है। यह हमें उन ग्रंथों का अधिक प्रामाणिक अनुसरण करने की संभावना की ओर भी ले जाता है क्योंकि हम विचार करते हैं कि वे हमारी अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं, हमारी अपनी सांस्कृतिक प्रथाओं और किस तरह से इनसे परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के दर्शन के हमारे अवतार को सीमित करने की चुनौती देते हैं।

यह डॉ. डेविड डिसिल्वा द्वारा नए नियम की सांस्कृतिक दुनिया पर दिए गए उनके व्याख्यान का विषय है। यह सत्र 8 है, पवित्रता और प्रदूषण से जुड़े इब्रानियों को पढ़ना।

